जीरे की उन्नत फसल के लिए जैविक पद्धति के बारे में दी जानकारी

बाड़मेर। कृषि विज्ञान केन्द्र गुड़ामालानी पर केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एवं चौ. चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में जागरूकता कार्यक्रम जीरे की उन्नत कृषि क्रियाएं और विपणन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रभारी डॉ प्रदीप पगारिया ने आये हुए सभी आगंतुओं का स्वागत करते हुए बताया कि जिले में लगभग 1,70000 हेक्टेयर में जीरे की बुवाई हुई है। उत्पादकता लगभग 3 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जो कि पड़ोसी राज्य से काफी कम है इस कमी को पूरी करने हेतु उन्नत कृषि क्रियाओं की आवश्यकता है। तथा साथ ही बाजारीकरण करने के लिए उच्च गुणवता तथा निर्यात हेतु उत्पादन के लिए आवश्यक पैमाना निर्धारित करने की जरूरत है ताकि उत्पादन के साथ-साथ उचित मूल्य मिल सके। जिसके लिए उक्त कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

डॉ. दिनेश प्रजापत डीडीएम नाबार्ड ने बताया कि आज के समय में कृषि विपणन की समस्या बहुत बड़ी है। जिसके लिए किसानों को समूह बनाकर समाधान करना होगा और एफपीओ का गठन करने के बारें में बताया। साथ ही उन्होंने एफपीओ से होने वाले फायदे के बारे में विस्तार से बताया। आईटीसी कंपनी के गिरीराज शर्मा ने आज के दौर में जैविक जीरे की मांग बढ़ रही है इसके लिए जैविक पद्धति अपनाने की सलाह देते हुए निर्यात किये जाने वाले देशों की मांग अनुसार किस प्रकार जीरा पैदा किया जा सकता है इस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रतिस्पर्धा के दौर में गुणवता बनाये रखना अति आवश्यक है ताकि किसान को फायदा मिल सके।

डॉ. आर.एस. मेहता काजरी पाली सेंटर ने जीरे की खेती के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए बीज, बीज उपचार, जीरे में लगने वाले विभिन्न रोगों के प्रबंधन जैविक विधियां तथा साथ ही किस प्रकार लागत कम की जा सके इस पर प्रकाश डाला। नियाम जयपुर के अजीत कुमार रोनियार ने वैश्विक मांग और निर्यात के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि हमको उपभोक्ता की मांग अनुसार एवं बाजार को देखते हुए पैदा करने की आवश्यकता है ताकि उचित मूल्य मिल सके। प्रगतिशील काश्तकार प्रहलाद सियोल ने कहा कि हम सबको किसानों के साथ साथ अंतिम उपभोक्ता को भी जागरूक करने की जरूरत है जिससे वो बाजार से उच्च गुणवता की सामग्री खरीदे जिससे काश्तकार एवं उपभोक्ता दोनों को लाभ प्राप्त हो सके एवं वातावरण स्वच्छ बनाया जा सके। कार्यक्रम का संचालन गंगाराम माली ने किया।